बत्तखों का घोंसला

एवलिन शॉ

चित्र: चेरिल पेप

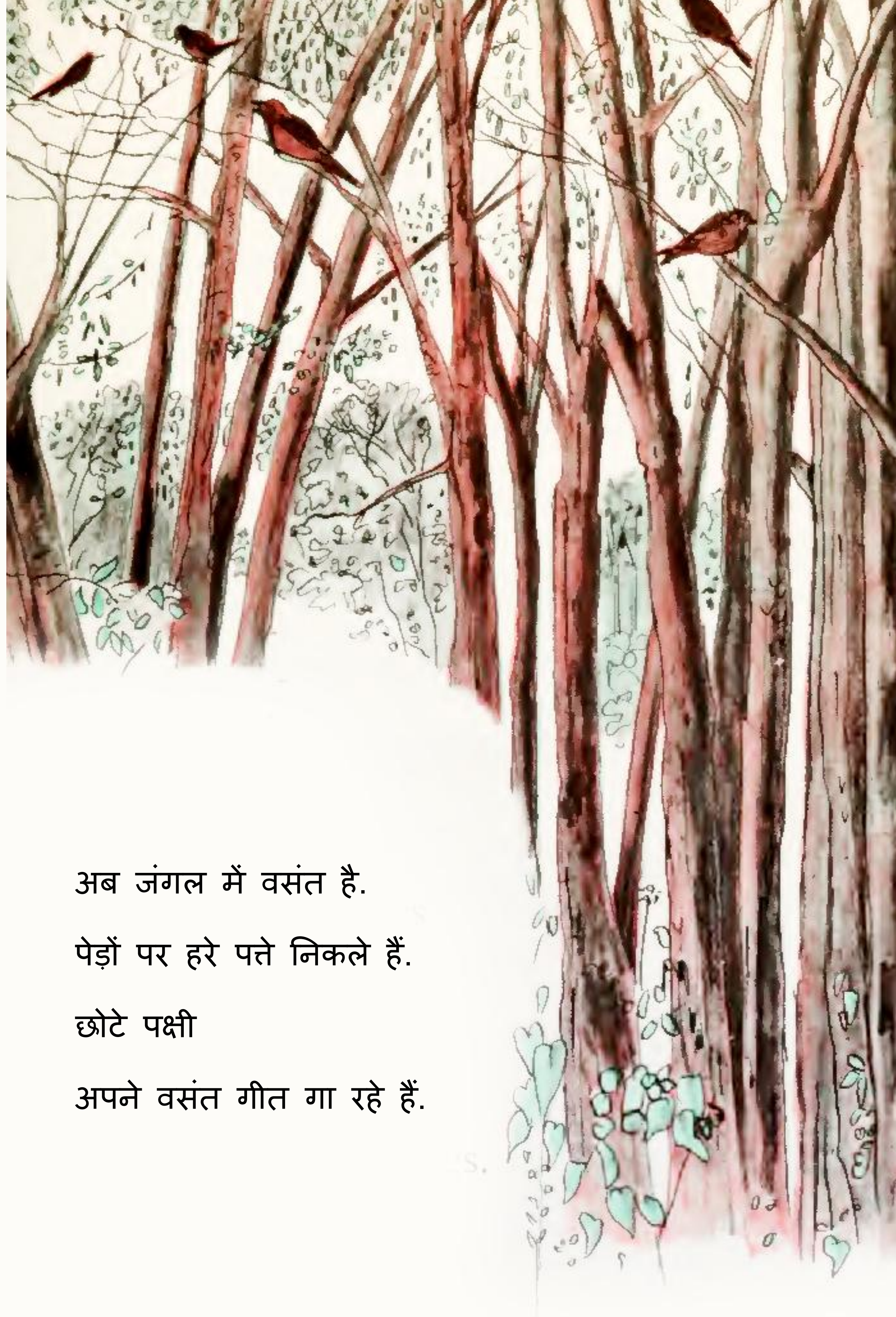


बत्तखों का घोंसला

एवलिन शॉ

चित्र: चेरिल पेप





अब जंगल में वसंत है.

पेड़ों पर हरे पत्ते निकले हैं.

छोटे पक्षी

अपने वसंत गीत गा रहे हैं.

एक छोटी सी झील पर

दो मोटे पक्षी

एक साथ तैर रहे हैं.

वे बत्तखेँ हैं.

नर बत्तख को ड्रेक कहते हैं.

उसके पंख चमकीले होते हैं

और वे धूप में चमकते हैं.



मादा बत्तख को हेन कहते हैं.

उसके पंख चमकते नहीं होते हैं.

ये दोनों बत्तखें साथी हैं.



मादा बत्तख का

झील के पास एक घोंसला है.

वह ड्रेक से दूर तैरती है.

वह अपने पंख फड़फड़ाती है

और एक पेड़ पर उड़ जाती है.



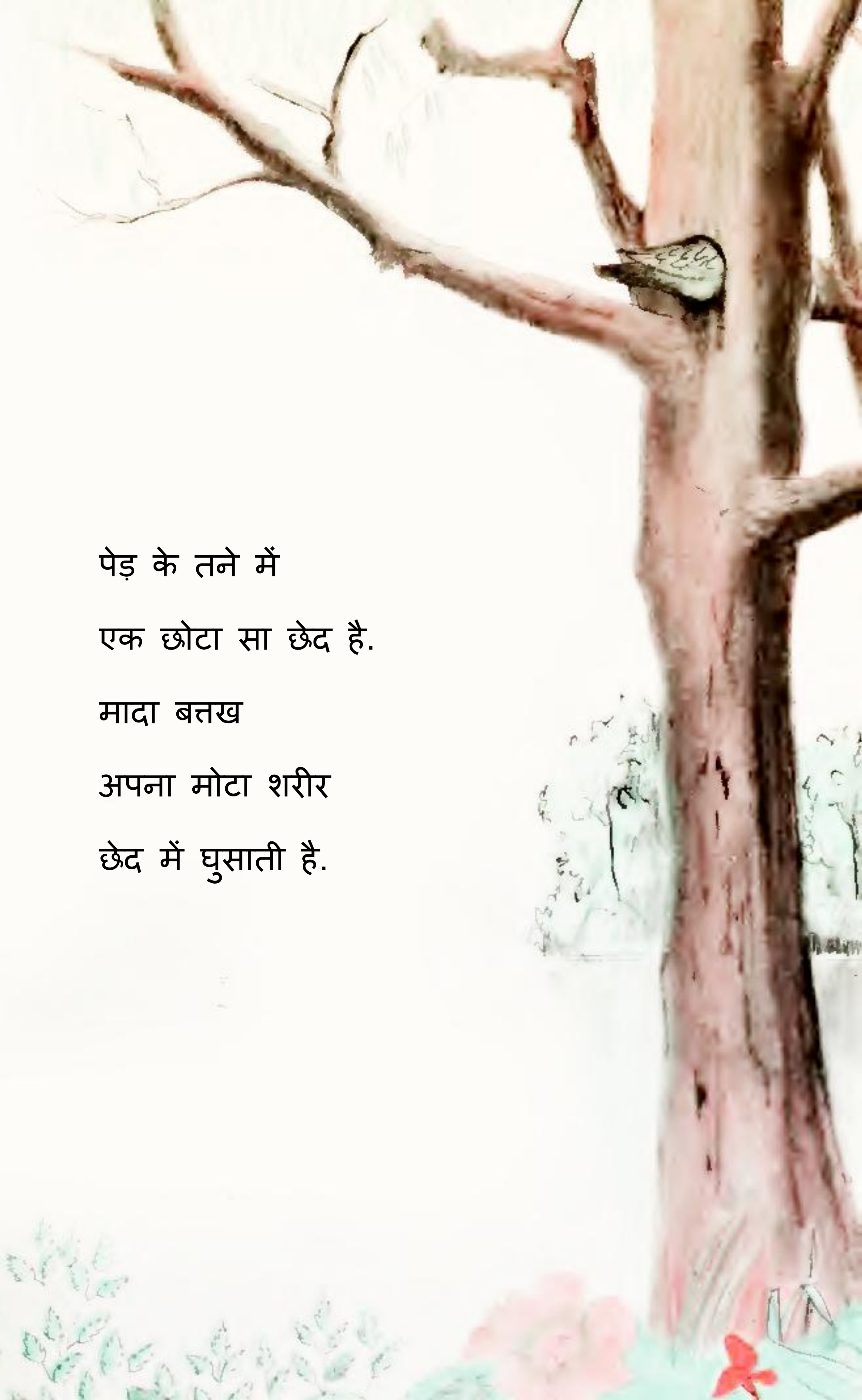
पेड़ के तने में

एक छोटा सा छेद है.

मादा बत्तख

अपना मोटा शरीर

छेद में घुसाती है.



अंदर अंधेरा और शांति है.

यहीं उसका घोंसला है.

घोंसला उसके पंखों

और पत्तियों के टुकड़ों से बना है.

घोंसले में छह अंडे हैं.





मादा बत्तख ने छह दिनों तक

हर दिन एक अंडा दिया है.

आज उसने एक और अंडा दिया.

फिर वह अपने मोटे शरीर को

घोंसले के चारों ओर हिलाती है.

वह अंडों को पंखों और पत्तियों

से ढक रही है.

अब वे साँपों और

दूसरे जानवरों से छिपे रहेंगे.

मादा बत्तख पेड़ से उतरती है.

नर बत्तख उसका इंतज़ार करता है.

वे इधर-उधर उड़ते हैं.

वे बीज, बलूत, जामुन

और खरपतवार ढूँढ़ते हैं.

वे पानी पीते हैं.

वे अपने पंखों को

साफ करते और फुलाते हैं.







रात में,

मादा बत्तख और नर बत्तख

एक पेड़ की शाखा पर

एक साथ आराम करते हैं.



अगली सुबह-सुबह

मादा बत्तख अपने पेड़ के घोंसले

की ओर उड़ जाती है.

वह अपने शरीर से एक

और अंडा देती है.

फिर वह अपनी छाती से

मुलायम पंख निकालती है.

वह इन पंखों को

अपने घोंसले में रखती है.



अब मादा बत्तख घोंसले में ही रहेगी.

लगभग तीस दिनों तक

वह अपने अंडों पर बैठेगी.

इससे अंडे गर्म रहेंगे.

पत्तियाँ और पंख

भी उन्हें गर्म रखेंगे.

अंडों के अंदर

बत्तख के बच्चे

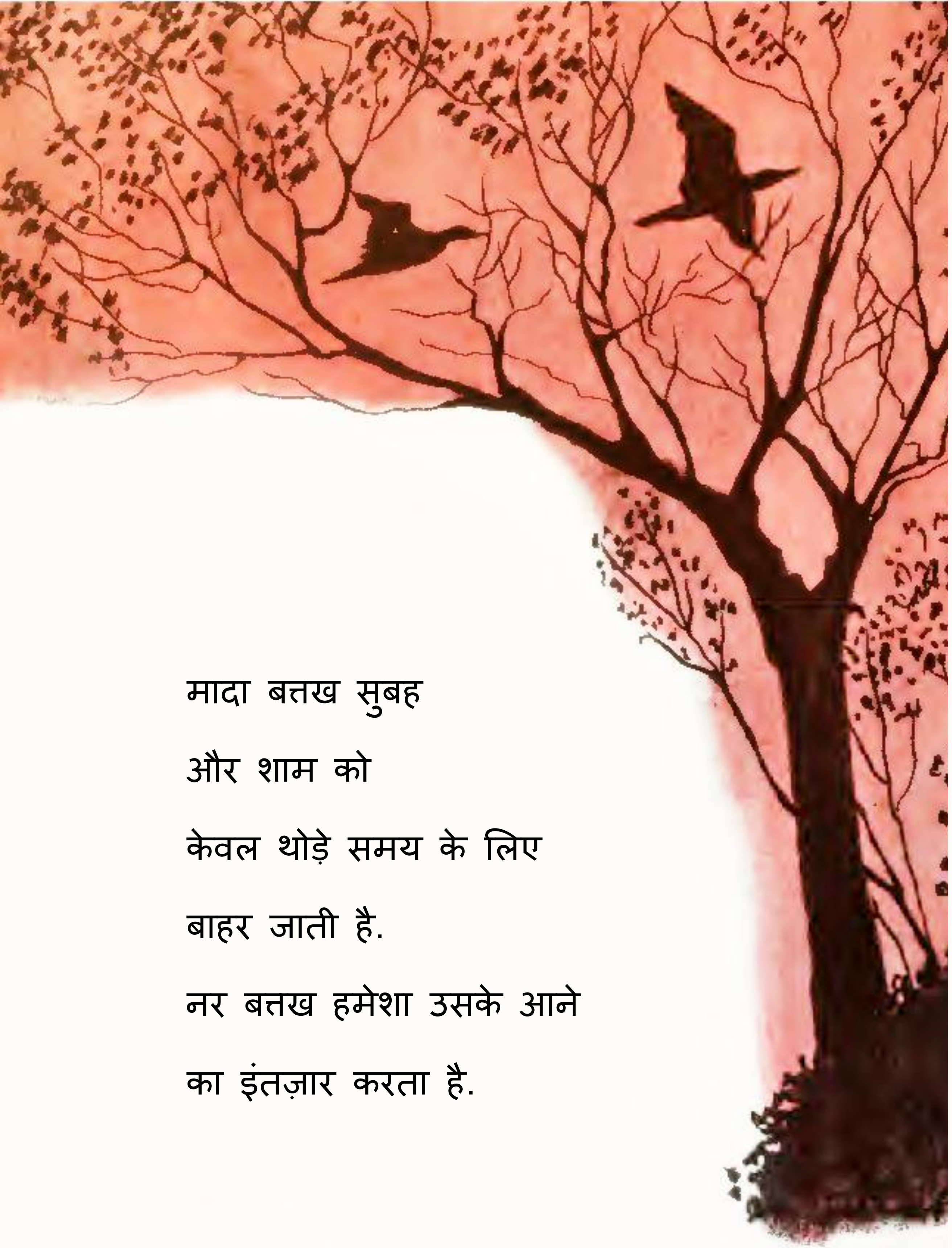
बढ़ने लगेंगे.

मादा बत्तख दिन के

ज़्यादातर समय

और पूरी रात अपने

अंडों पर बैठी रहती है.



मादा बत्तख सुबह

और शाम को

केवल थोड़े समय के लिए

बाहर जाती है.

नर बत्तख हमेशा उसके आने

का इंतज़ार करता है.

वे साथ-साथ उड़ते हैं.

वे खाते-पीते हैं

और अपने पंख साफ करते हैं.

फिर दोनों पक्षी

वापस पेड़ पर उड़ जाते हैं.

मादा बत्तख अंदर चली जाती है.

नर बत्तख बाहर रहता है.

वह वहाँ तब तक इंतज़ार करेगा

जब तक मादा फिर से

बाहर नहीं आ जाती.



तीस दिनों बाद जर्दी खत्म हो जाती है.

नर बत्तख के बच्चे अंडे से बाहर

निकलने के लिए काफी बड़े हो जाते हैं.

वे अंडे के अंदर मुड़-घूम सकते हैं.

एक बत्तख का बच्चा अपना

खोल फोड़ना शुरू कर देता है.

इसे *पिपिंग* कहते हैं.

दिन बीतते हैं.

प्रत्येक अंडे के अंदर

एक बच्चा बत्तख पल रहा है.

उसका भोजन अंडे की जर्दी है.

जर्दी, अंडे का पीला भाग होता है.





एक और बत्तख का बच्चा अपना
खोल फोड़ता है, फिर दूसरा,
फिर तीसरा.



कुछ घंटों बाद सभी
बत्तख के बच्चे
अपने अंडों से बाहर आ जाते हैं.
वे गीले और चिपचिपे होते हैं.

वे अपनी माँ के पास

इधर-उधर उछलते हैं.

माँ तब तक घोंसले में

बैठी रहती है

जब तक बच्चों के पंख

सूख नहीं जाते.

मादा बत्तख हल्की

आवाज़ निकालती है.

अचानक वह रुक जाती है.



घोंसले के छेद पर शोर होता है.





एक गिलहरी अपना सिर
छेद में डालती है.
पेड़ का छेद कभी
उसका घर हुआ करता था.
लेकिन अब यह
मादा बत्तख का घर है
बत्तख उसे अंदर नहीं आने देगी.

अगले दिन

बत्तखें सूख जाती हैं.

उनके पंख

मुलायम और रोएँदार होते हैं.



प्ली! प्ली! प्ली!

बत्तखें एक दूसरे को पुकारती हैं

और ऊपर-नीचे कूदती हैं.

वे अब घोंसला छोड़ने को तैयार हैं.

वे तैरने और अपना

भोजन खोजने को तैयार हैं.





मादा बत्तख छेद से बाहर देखती है.

उसे कोई जानवर नहीं दिखता है.

अब बाहर जाना सुरक्षित है.

मादा बत्तख झील में कूद जाती है.

कुक, कुक, कुक, कुक, कुक.

वह अपने बच्चों को बुलाती है.



पेड़ के घोंसले के अंदर

बत्तख के बच्चे उसे सुनते हैं.

वे ऊपर-नीचे उछलते हैं.

एक बच्चा छेद के ऊपर

चढ़ जाता है.

बच्चा चढ़ने के लिए

अपने पंजों का इस्तेमाल करता है.







बच्चा बाहर देखता है.

फिर वह अपने पंख फैलाता है

और पानी में नीचे कूद जाता है.



बच्चा तैरकर

अपनी माँ के पास जाता है.

फिर एक और बच्चा तैरकर

नीचे आता है,

और एक और,

और एक और.

हर बच्चा, मादा बत्तख

की ओर तैरता है.





अब छह बत्तखें

मादा बत्तख के साथ हैं.

वह उनके साथ तैरने के लिए

तैयार हो रही है.

लेकिन वह रुक जाती है.

घोंसले में से अभी भी

आवाज़ें आ रही हैं.



दो बच्चे अभी भी अंदर हैं.

वे बाकी की तरह ताकतवर नहीं हैं.

वे छेद के ऊपर चढ़ने की

कोशिश करते हैं,

लेकिन फिर वापिस गिर जाते हैं.







अंत में एक बच्चा

ऊपर पहुँच जाता है.

दूसरा बच्चा भी

ऊपर पहुँच जाता है.

वे बाहर कूदते हैं

और मादा बत्तख की ओर तैरते हैं.

मादा बत्तख घोंसले से

और आवाज़ें सुनने की

कोशिश करती है,

लेकिन अब उसे कोई और

आवाज़ सुनाई नहीं देती है.

फिर वह आठ बच्चों को

अपने साथ लेकर तैरती है.





अब मादा बत्तख

और उसके बच्चे झील में ही रहेंगे.



बत्तखों के अंडे सेने से पहले

ही नर बत्तख उड़ गई थी.

मादा बत्तख को बत्तखों की

देखभाल खुद ही करनी होगी.

कई जानवर बत्तख के बच्चे

खाना पसंद करते हैं.

मादा बत्तख उन पर नज़र रखती है.

वह अजीब आवाज़ें सुनती है.



परिवार कुछ जलीय पौधों

के पास तैरता है.

एक स्नैपिंग कछुआ

पौधों के अंदर छिपा हुआ है.

मादा बत्तख को उसकी

जानकारी नहीं है.



कछुआ करीब आता है.

मादा बत्तख उसे सुनती है.

वह चेतावनी देने वाली आवाज़ निकालती है.

वह तेज़ी से तैरती है.

बत्तख के बच्चे भी तेज़ी से तैरते हैं.

लेकिन एक बत्तख का बच्चा

उतनी तेज़ी से नहीं तैर पाता.

स्नेपिंग कछुआ

अपना मुंह खोलता है

और बत्तख के बच्चे को खा जाता है.





अगली सुबह,

एक बड़ी मछली

बत्तख के बच्चों की टोली को देखती है.

वह तैरकर आती है

और बत्तख के एक बच्चे को

अपने मुँह में पकड़ लेती है.



अब सिर्फ़ छह बत्तख के बच्चे ही बचे हैं.

लगभग दो महीने तक

वे अपनी माँ के करीब रहेंगे.

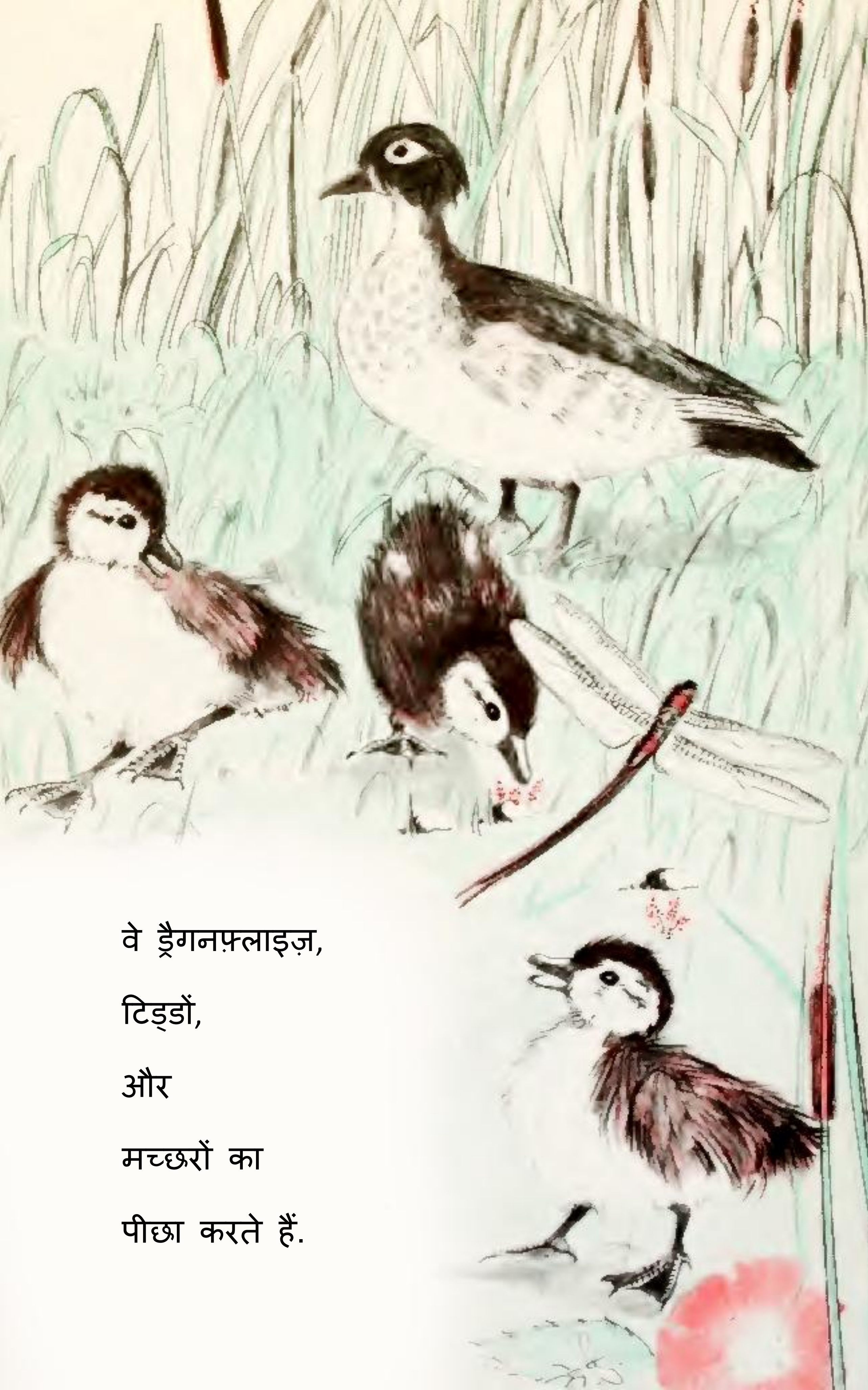
वे माँ की आवाज़ सुनते हैं.

माँ जहाँ भी जाती है,

वे उसका पीछा करते हैं.







वे ड्रैगनफ़्लाइज़,

टिड्डों,

और

मच्छरों का

पीछा करते हैं.

पहले तो

बत्तख के बच्चे

उन्हें पकड़ नहीं पाते हैं.

लेकिन वे बार-बार कोशिश करते हैं.

अंत में, वे उन्हें काफी तेजी

से पकड़ पाते हैं.

बत्तख के बच्चे, बीज भी खाते हैं.



बत्तख के बच्चे

उन जानवरों से

छिपने की कोशिश करते हैं

जो उन्हें खा सकते हैं.

झील पर वे पानी के

नीचे गोता लगाते हैं.





वे ज़मीन पर बैठते हैं

और बिल्कुल हिलते नहीं हैं.





दिन बीतते जाते हैं.

बत्तख के बच्चे बड़े हो रहे हैं.

उनके बच्चों वाले पंख झड़ जाते हैं

और उड़ने वाले पंख उग आते हैं.

अब उन्हें मादा बत्तख की

देखभाल की ज़रूरत नहीं है.

वे खुद उड़ सकते हैं.

जल्द ही वे अन्य

बत्तखों के साथ मिल जाते हैं

और सर्दियों के लिए उड़ जाते हैं.

मादा बत्तख भी ऐसा ही करती है.

अगले वसंत में जब एक

छोटी मादा बत्तख

झील की ओर उड़ती है

तो उसके साथ

एक नर बत्तख भी होता है.

वो उसका साथी हैं.

मादा बत्तख घोंसला ढूँढ रही है.

वह पेड़ों के छेदों में देखती है.

एक छेद कठफोड़वे का है.

दूसरा छेद गिलहरी का है.

तीसरा छेद खाली है,

लेकिन वह उसमें नहीं जाती है.





युवा मादा बत्तख

एक और छेद में जाती है.

अंदर बहुत अंधेरा और शांति है.

छेद में पंख और पत्तियों के टुकड़े हैं.

यह एक पुराना घोंसला है,

जिसे किसी अन्य

मादा बत्तख ने बनाया होगा.

युवा मादा बत्तख

अपने अंडे देने के लिए

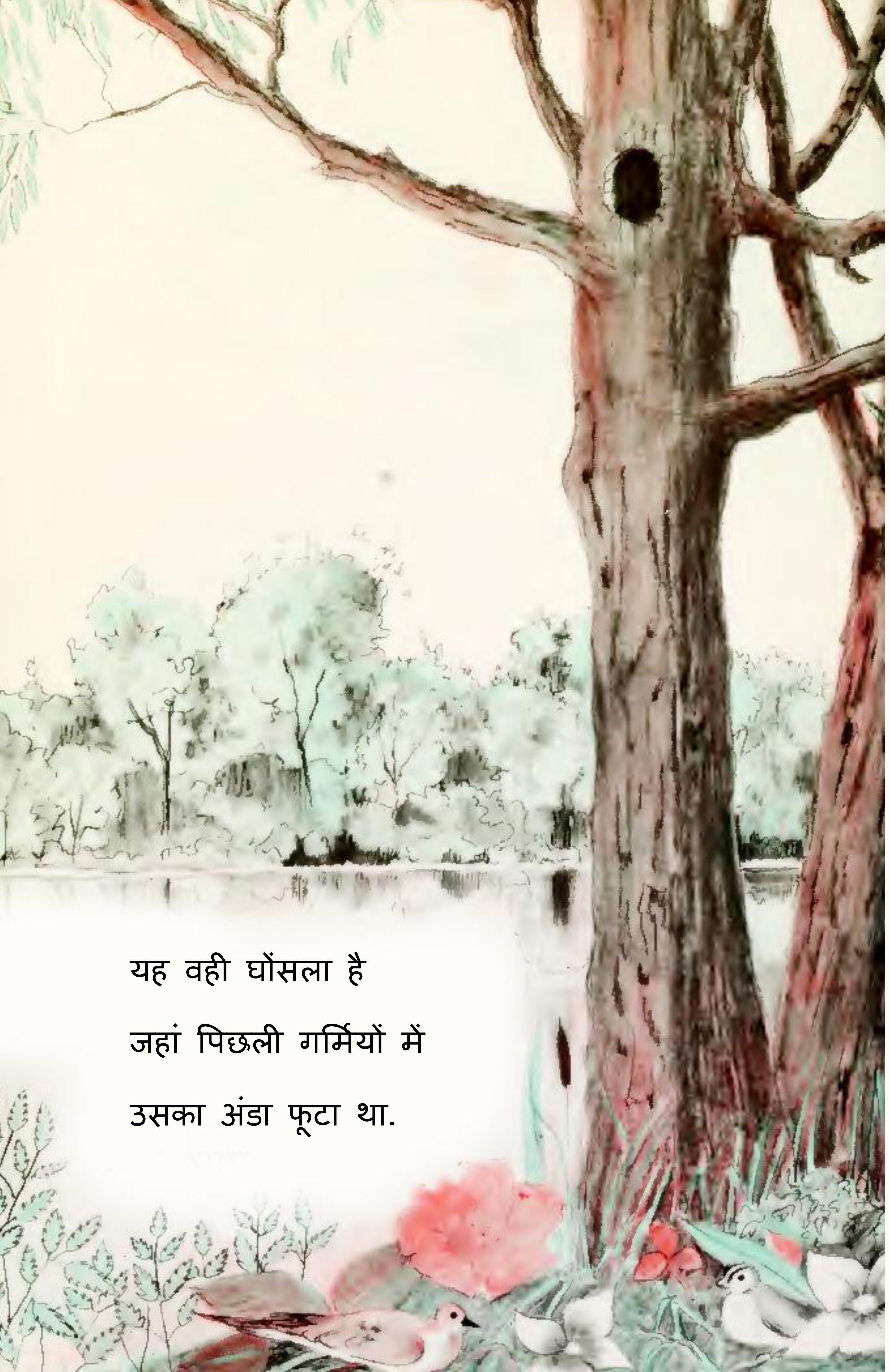
इस जगह को चुनती है.

यह एक खास जगह है,

लेकिन मादा बत्तख को

उसका पता नहीं है.





यह वही घोंसला है

जहां पिछली गर्मियों में

उसका अंडा फूटा था.